स्वतंत्र लक्ष्यहीन चित्रकारी से पूर्ण कला की ओर

–पायल हीरानन्दानी

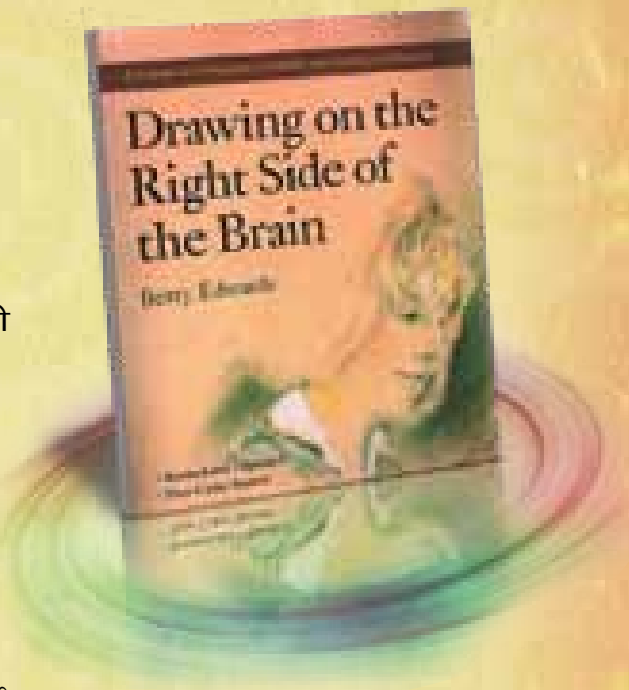

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हम सभी में चित्र बनाने की क्षमता है जो छुपी हुई है। बेट्टी एडवर्ड्स हमें इस बात की अन्तर्दृष्टि देती हैं कि एक कलाकार की नजर कैसे पाई जाए और थोड़े से समय में इस स्तर तक कैसे पहुँचें कि जब हम अपनी कला को लैमिनेट करवा सकें।

इस पुस्तक को खासतौर पर उन लोगों के लिए नहीं लिखा गया है जो कलाकार बनना चाहते हैं या जिनमें चित्रकारी की प्रतिभा है। यह तो ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए है जिसने छोटी उम्र के बाद चित्र बनाने की कोशिश तो नहीं की पर मन में यह इच्छा जरूर थी कि चित्रकला सीखनी चाहिए। यह न केवल आपको बल्कि महान कलाकारों को भी बोधात्मक कौशल प्राप्त करने के पहले और बाद में व्यावहारिक रूप से तुलना करने के लिए आधार प्रदान करती है।

वास्तव में यह आपकी रचनात्मकता को प्रकट करती है ताकि आप अवलोकन की उन तकनीकों की गहराइयों में जा सकें जिन्हें कला के नाम पर शोध करने के बाद बरसों से प्रयोग में लाया जाता रहा है।

हममें में से कई ऐसे हैं जो शुरू में आकार या आकृति बनाने में दिलचस्पी लेते थे पर नौ या दस बरस के होते ही यह रुचि खत्म हो गई और हमने इस क्षेत्र में या तो अभ्यास किया ही नहीं या फिर बहुत कम किया। इसलिए वयस्कता तक पहुँचने पर हम खुद से यह उम्मीद करने लगे कि हम वयस्कों की तरह से चित्र बनाएँ और जब ऐसा नहीं हुआ तो हम पूरी तरह से निराश हो गए क्योंकि नौ या दस बरस की उम्र में हममें जितना कौशल था, अब भी वह उतना ही था। तो हमें यह गुत्थी सुलझानी ही होगी–क्या चित्र बनाना गाड़ी चलाने (ड्राइविंग) और पढ़ने के कौशलों से भिन्न है? एक कलाकार रेखा से शुरू करके पहले गुण फिर रंग और अन्त में पेन्टिग तक का तार्किक अनुक्रम सीखता है। उसमें स्पष्ट रूप से देखने और चित्र बनाने की क्षमता होनी चाहिए। इस महत्त्वपूर्ण पहलू की यहाँ चर्चा की गई है। जब आप अनुभवी कलाकारों की तरह से चीजों को खास तरीके से देखते लगते हैं तब आप चित्र बना पाते हैं।

एक रचनात्मक व्यक्ति वह होता है जो किसी दुनियावी साधारण डेटा को एक नई रचना में बदल दे। इसके लिए सूचना प्रक्रमण के दो तरीकों को समझने की आवश्यकता है–अक्सर मस्तिष्क का प्रबल बायाँ हिस्सा निरन्तर दाएँ हिस्से पर हावी होने का प्रयास करता है और व्यक्ति को अपने मन की आँखों में मौजूद चीजों को देखने से रोकता है। यहाँ यह कहा गया है कि दाएँ हिस्से का इस तरह से प्रयोग करना चाहिए ताकि तार्किक, विश्लेषणात्मक और समय के प्रति सजग बाएँ हिस्से को बन्द करके या पीछे छोड़कर दाएँ मस्तिष्क को अपनी कल्पना का चित्र बनाने के लिए विकसित किया जा सके।

अकसर हमें यह नहीं पता होता कि हमारे मस्तिष्क में क्या चलता रहता है इसलिए लेखिका इस बात पर जोर देती हैं कि हमें बाएँ से दाएँ की ओर के बदलाव को पहचानना चाहिए। एडवर्ड्स की धारणा है कि तार्किक बायाँ मस्तिष्क, जो प्रबल होता है, प्रतीकों में महसूस करता है और दृश्यमान दुनिया में वस्तुओं को उन प्रतीकों के वर्ग का मानकर "पहचानता" है; इसलिए यह दाएँ मस्तिष्क की उस क्षमता में दखल देता है जिसके तहत हम चीजों को चित्रित करते समय उन्हें वैसे ही देखते हैं जैसी वे वास्तव में दिखती हैं। आपका बायाँ मस्तिष्क कहता है, "चाँद सिर्फ एक गोलाकार वस्तु है", और आपके दाएँ मस्तिष्क को यह देखने से रोकता है कि चाँद के अन्दर एक बहुत जटिल एवं विषम आकार है।

लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सभी ड्रॉइंग एक सी ही हैं–कोई एक ड्रॉइंग किसी अन्य ड्रॉइंग की तुलना में अधिक कठिन नहीं है। एक बार जब आँख यथार्थवाद के माध्यम से देखना सीख लेती है तो वह जो कुछ भी देखती है उसे कमोबेश ड्रॉइंग में प्रस्तुत कर सकती है।

कला की अनेक पुस्तकें "विचारों या कल्पना" की बात तो करती हैं लेकिन यह नहीं बतातीं कि इन्हें प्राप्त कैसे किया जाए। इस पुस्तक में कला पर कई शिक्षण अभ्यास दिए गए

हैं—ऐसे मानसिक अभ्यास जो दाएँ मस्तिष्क को मजबूत करें एवं बाएँ मस्तिष्क को पृष्ठभूमि में जाने पर मजबूर करें।

जॉन मीरो की "पर्सनेज विद स्टार" (1933)—रचना का उदाहरण

इसमें ऐसे अभ्यास भी हैं ही जिन्हें लेखिका ने स्वयं विकसित किया है साथ ही ड्रॉइंग के वे परम्परागत तरीके भी हैं जिनका उन्होंने इस्तेमाल किया है। ये सभी आपकी रचनात्मकता को प्रवाह देने पर आधारित हैं। ये हमें ढेर सारी रणनीतियों के बारे में बताते है और यह खुलासा भी करते हैं कि जैसे बच्चे का चलना सीखना एक स्वचालित प्रक्रिया है वैसे ही ड्रॉइंग भी अत्यन्त सहज गतिविधि हो सकती है।

उन्होंने जिन विषयों की चर्चा की है वे इस प्रकार हैं—रचना (जिस तरह से एक ड्रॉइंग के घटकों की व्यवस्था की जाती है), नेगटिव स्पेस ड्रॉइंग जो रचना की रुचि एवं सन्तुलन में योगदान देती है, हैण्डी व्यू फाइण्डर का प्रयोग जो ड्रॉइंग को समझने में सहायता देता है। उन्होंने परिप्रेक्ष्य को सिखाने के लिए शिक्षण के सामान्य तरीकों का प्रयोग नहीं किया है जैसे कि पॉइंट विधि, लेकिन ध्यान से देखने पर बल दिया है (कोणों का अवलोकन और लम्बाई व चौड़ाई की तुलना करना)। उल्टी ड्रॉइंग, दर्पण प्रतिबिम्ब, परिरेखा ड्रॉइंग (आप जो ड्रॉइंग कर रहे हैं, उसे न देख पाना) जैसे कि हाथ की परिरेखा ड्रॉइंग प्रतीक प्रणाली को नजरअन्दाज करके आपको इस बात की अनुमति देती है कि आप किनारों को ठीक वैसे ही बनाएँ जैसे वे हैं। अगर आपको जिगसॉ पजल पसन्द है तो हर टुकड़े के बारे में यह सोचने की कोशिश कीजिए कि वह अलग है और बाद में उन सबको जोड़कर एक छवि या वस्तु बनाइए। तो देखा आपने, ड्रॉइंग कितनी दिलचस्प हो सकती है !

इसके अलावा उन्होंने शेडिंग और रंग सम्बन्धी पहलुओं को भी छुआ है। यह एक ऐसा

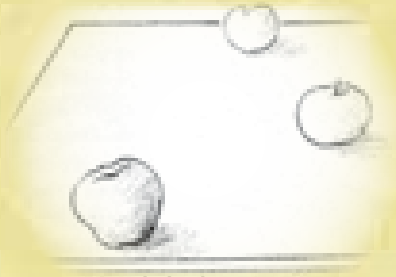

ध्यान से देखने का उदाहरण

कौशल है जिसे पाने की इच्छा हर विद्यार्थी में होती है। ये अभ्यास इस बात को समझने में हमारी मदद करते हैं कि हम चित्र क्यों नहीं बना पाते और फिर उन कारणों को विस्तारपूर्वक समझाते हैं ताकि हम किसी खास कमी से उबरने की प्रक्रिया को समझ पाएँ।

जो भी ड्रॉइंग सीख रहा है उसे इस बात में सक्षम होना चाहिए कि वह अपनी कला में अपनी आत्मा की अनुभूति दर्शकों को करा पाए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्रकटन और व्यक्तित्व उतने ही अभिव्यक्त हो पाए हैं जितना कि दर्शक उसमें बताई गई भावना को महसूस करता है। विरोधाभासी रूप से यह कहा जाता है कि कलाकार जितना अधिक

पोर्टेट ड्रॉइंग का उदाहरण

अपने आसपास की चीजों को देखता है उतने ही अधिक स्पष्ट रूप से हम कलाकार के नजरिए से देखते हैं। इस प्रकार हम जान पाते हैं कि ड्रॉइंग आपके एक पक्ष के सुन्दर और आनन्दमय रूप का प्रतिबिम्ब है और जिसमें ऐसी ऊर्जा है जो आपके काम में उत्पन्न होती है।

यह पुस्तक निश्चित रूप से एक नौसिखिए को यह बताती है कि वह दुनिया के सामने एक अद्वितीय अभिव्यक्ति करने के लिए अपनी खुद की ड्रॉइंग शैली कैसे प्राप्त करे। आप जो देखते हैं उसमें विश्वास करना जरूरी है। यदि कोई वाकई चित्रकारी सीखना चाहता है तो इस पुस्तक का प्रयोग स्व—अध्ययन पाठ्यक्रम के रूप में किया जा सकता है। मेरा मानना है कि किसी को भी देखना सिखाया जा सकता है और इस दृष्टि से ड्रॉइंग को स्वाभाविक रूप से दिमाग में आना चाहिए।

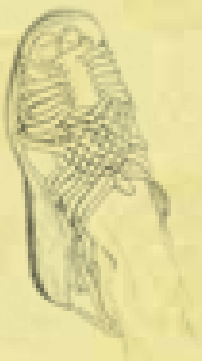

पायल हीरानन्दानी पुणे *विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक हैं। वैसे तो कला में उनके पास कोई औपचारिक डिग्री नहीं है, लेकिन वे नियमित रूप से कला के कोर्सों में भाग लेती रही हैं। उन्हें यह देखकर बहुत कुतूहल और विस्मय होता है कि रोजमर्रा की जिन्दगी की अलग—अलग तरह की बातों को ड्रॉइंग और पेन्टिंग में इतने विभिन्न तरीकों से कैसे व्याख्यायित किया जा सकता है। वे लेखन, पठन, एनिमेशन, कविता और संगीत में भी रुचि रखती हैं। उन्होंने पहले बी.पी.ओ. एवं एनिमेशन इण्डस्ट्री में काम किया है। उनसे payal.hiranandani@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*